खास रपट अध्यात्म

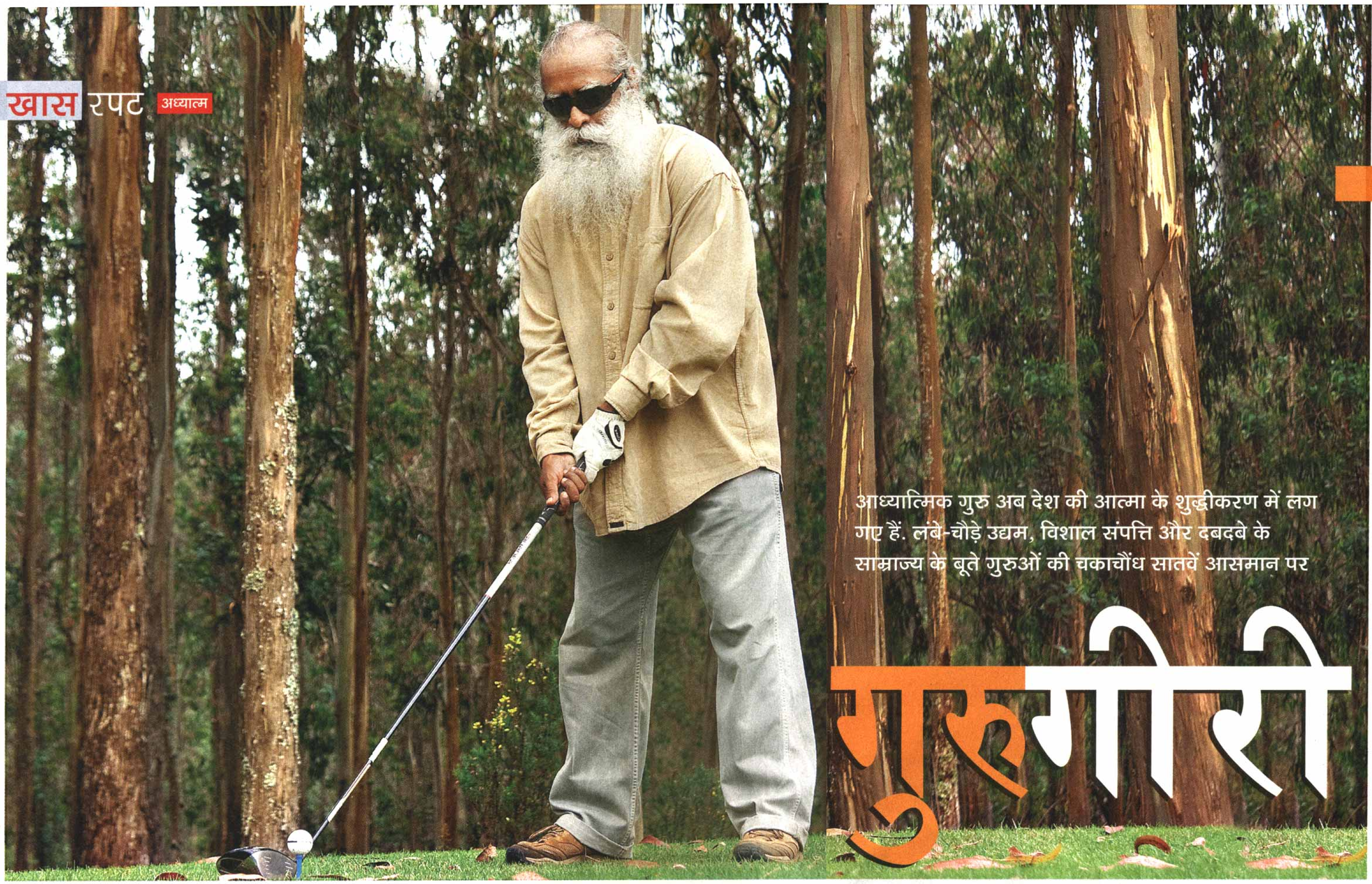

गुरुगीरी

आध्यात्मिक गुरु अब देश की आत्मा के शुद्धीकरण में लग गए हैं. लंबे-चौड़े उद्यम, विशाल संपत्ति और दबदबे के साम्राज्य के बूते गुरुओं की चकाचौंध सातवें आसमान पर

दमयंती दत्ता

नया साल, नया दशक और समय एक नए अवतार का. जिस व्यक्ति ने देश को योग का दीवाना बना दिया, वह अब 'संपूर्ण क्रांति' की बातें कर रहा है. भ्रष्ट नेताओं से परेशान बाबा रामदेव ने देशव्यापी भारत स्वाभिमान यात्रा शुरू कर दी है, जो देश भर की 2.25 लाख ग्राम पंचायतों से और 624 जिलों से गुजरेगी. भीड़ भरी जनसभाओं में बाबा माओवादियों से सुलह कराने की बात करते हैं, नीतीश कुमार की तारीफ करते हैं, मायावती की आलोचना करते हैं और 2014 के चुनावों में तमाम दलों का सफाया करने की धमकी दे रहे हैं, ''अपना आचार-व्यवहार साफ सुथरा कर लें. वरना भारतीय स्वाभिमान के राष्ट्रभक्त अनुयायी आपको 2014 के चुनाव में सबक सिखाएंगे.'' सत्तर के दशक में *सिंहासन खाली करो* का आह्वान करने वाले जेपी जैसे नेता के अभाव में आध्यात्मिक गुरु राजनीति के मैदान में कूद पड़े हैं. योग के पोस्टर ब्वॉय नागरिक अधिकारों के कार्यकर्ता बनते जा रहे हैं.

आज के गुरु पारंपरिक गुरु जैसे नहीं रह गए हैं. आधुनिक साधु इस असाधारण दौर के लिए असाधारण तरह के समाधान पेश कर रहे हैं. ठेठ आध्यात्मिकता उनकी ताकत नहीं है, उनकी ताकत समसामयिक होना है. वे मात्र मार्गदर्शन देने वालों में से भी नहीं हैं, जो लोगों को खतरों से पटे पड़े आधुनिक जीवन को जीने का रास्ता बताते हों. एक उभरती अर्थव्यवस्था में वे तुरंत समाधान की खोज में अपने आश्रम में आने वाले चेलों के आत्म-विश्वास को प्रतिबिंबित करते हैं. योग के इंजन के साथ करिश्मे की पटरी पर चलते हुए उन्होंने विशाल उद्यम जमा लिया है. वे अमीरों के बीच उठते-बैठते हैं, राजनीति में दांव लगाते हैं, और प्रभावी गुरुगीरी की अवधारणा को पुन:परिभाषित करते हैं.

लिहाजा, उस चीज की उम्मीद कीजिए, जिसकी कोई उम्मीद ही नहीं थी. वह स्वामी, जिसका पेट मरोड़ना 8.5 करोड़ आंखों को रोज सुबह टीवी परदों से चिपका देता है, अपनी आंखें राजनीति पर गड़ा चुका है. एक गुरु है, जो अपने ध्यान केंद्र में भी उतना ही सहज होता है जितना गोल्फ कोर्स में. एक नागा बाबा है, जो हैसेलब्लाड कैमरा लेकर अच्छे-अच्छे नजारों के पीछे भागता है. एक माताजी हैं, जो पेरिस का हैट पहनती हैं और हॉलीवुड के भक्तों के कष्ट हरती हैं. एक संत हैं, जिन्होंने ''सबसे बड़ा स्वर्ण मंदिर'' सबसे कम संभव समय में बना डाला है. एक कॉन्वेंट शिक्षित स्वामिनी हैं, जो एक म्युजिक कंपनी की मालकिन भी हैं. एक त्रिशूलधारी महाराज हैं, जो विज्ञान और तकनीक के प्रोत्साहन के लिए संस्थान खोलते रहे हैं. और एक युवा अर्थशास्त्री हैं, जो मसीहा न बनने की पुरजोर कोशिश कर रहे हैं.

इन सबके मर्म में है एक ऐसे सुपर हीरो की ललक, जो इस दौर के लिए फिट हो. लेकिन यह आसान नहीं है, जैसा कि राज पटेल को पता लग गया है (देखें बॉक्स). सैन फ्रांसिस्को, अमेरिका में रहने वाले युवा अर्थशास्त्री पटेल एक दिन सुबह जब जगे, तो उन्होंने पाया कि दुनिया बदल चुकी है. नए दौर के एक धार्मिक पंथ शेयर इंटरनेशनल के अनुयायी उन्हें मसीहा मैत्रेय बताते हुए उनका जयकारा लगा रहे हैं. इसके सदस्य इंटरनेट पर मौजूद प्रोफाइल्स को खंगाल रहे थे, ताकि वे जिस गुरु की तलाश कर रहे हैं उससे मेल खाता चेहरा उन्हें मिल जाए. इस गुरु की प्रोफाइल में बाकी बातों के अलावा यह दर्ज था कि वह भारतीय मूल का होगा, 1972 में जन्मा होगा और थोड़ा हकलाता होगा. पटेल में ये सारी बातें थीं. और ईश्वरीय महात्मा होने से वे जितना इनकार करते थे, उतना ही उसे साबित करते जा रहे थे क्योंकि 'नए मसीहा' से यह भी उम्मीद थी कि वह अनमना भी होगा. अब दोनों पक्ष अपने-अपने दावे पर टिके हुए हैं.

सदगुरु जग्गी वासुदेव, 54 वर्ष
कोयंबतूर, तमिलनाडु

विशेष: ईशा योग

शैली: हाजिरजवाब और तार्किक. बाइक की सवारी, गोल्फ खेलना, कार से सफर करते हुए सीईओ शैली में बैठकें करना पसंद है. अपनी समाधि क्रिया से लोगों को आनंदातिरेक का अनुभव करा सकते हैं.

अतीत: एक डॉक्टर पिता की संतान. गुरु बनने से पहले पोल्ट्री और भवन निर्माण का कारोबार करते थे.

ताकत: वेलियनगिरि की तलहटी में 270 एकड़ का वन आश्रम, जहां 1,800 लोग रहते हैं, सप्ताहांतों में 8-10 हजार लोग आते हैं. दुनिया भर में उनके 150 केंद्रों में 1 लाख से ऊपर स्वयंसेवक सक्रिय हैं. अमेरिका के टेनिस्सी में 1,700 एकड़ में उनका एक आश्रम बन रहा है.

''मैं एक संशयवादी था. कभी मंदिर नहीं गया, वेद नहीं पढ़े. आप मुझे आधुनिक गुरु कह सकते हैं.''

यह आश्रम स्टाइल के जश्न का दौर है. हरा-भरा मैदान सैकड़ों दीयों से आलोकित है, नगाड़े बजाने वाले तैयार बैठे हैं. एक पूर्व मुख्यमंत्री धीमे कदमों से और सहज भाव से वहां से गुजरते हैं. कोयंबतूर के इस आश्रम में बड़ी सियासी हस्तियां और बड़े व्यवसायी थोक में मिलते हैं. शायद इस कारण कि सद्‌गुरु जग्गी वासुदेव यह जानते हैं कि धर्म अकेले नहीं चल सकता. वे कहते हैं, ''हम लोगों ने इस देश को भगवान के हाथों में छोड़ दिया है. और यही वह गड़बड़ी है, जो आप देख रहे हैं. जब तक आप इसे जिम्मेदारी के साथ अपने हाथों में नहीं लेते, मैं कहता हूं, तब तक यह देश ऐसा ही गड़बड़ बना रहेगा.'' योगी के परंपरागत मानदंडों के लिहाज से ये सद्‌गुरु अजीब हैं. वह अपनी डर्ट बाइक बेहद शौक से चलाते हैं, कोयंबतूर के वन में 150 एकड़ के अपने स्वर्ग में हैंग-ग्लाइडर्स पर विचरण करते हैं, वेलियनगिरि की पहाड़ियों के नीचे गोल्फ खेलते हैं, ऊबड़खाबड़ रास्तों से कमरतोड़ रफ्तार में भागती शानदार रेंज रोवर्स में बैठकें करते हैं. इस निश्ंचितता और प्रसन्नता के बावजूद जब वह अपनी लहराती दाढ़ी और उड़ते चोले में समाधिस्थ होकर उछलने-नाचने लगते हैं, या अपने ''नए तरीके''—ईशा योग— से लोगों को परमानंद की अनुभूति करा देते हैं, तब एक गुरु का ग्लैमर अपने चरम पर पहुंच जाता है. भारत में, केबल टीवी पर वे शीर्ष टीआरपी पाने वालों में एक हैं. अमेरिका में, उनकी तस्वीरें बसों पर ऐसे

चिपकी होती हैं, जैसे वे कोई फिल्म स्टार हों. सद्‌गुरु हंसते हैं, ''पहले तो मैं संशयवादी था. कभी मंदिरों में नहीं गया. कभी वेद नहीं पढ़े. आप मुझे आधुनिक गुरु कह सकते हैं.''

कोई परंपरागत गुरु बंगलूरू के इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ साइंसेज के युवा कंप्यूटर वैज्ञानिक को आकर्षित कर भी नहीं सकता. स्वामी नि:सर्ग, जो अब सद्‌गुरु के ईशा फ़ाउंडेशन में एक साधु हैं, जरूरत से ज्यादा तार्किकतावादी थे. उनकी भेंट जींस और टी शर्ट पहनने वाले, पोल्ट्री और कंस्ट्रक्शन का काम करने वाले और अपना संदेश पूरे शहर में पहुंचाने के लिए अंधाधुंध गति से मोटरसाइकिल दौड़ाने वाले शख्स से हुई. नि:सर्ग कहते हैं, ''वे एकदम अलग थे. कोई बकवास नहीं, साफ तौर पर तार्किकतावादी, पहुंच के भीतर और पारदर्शी.'' उनकी नजर में ये ही वह चीजें हैं, जो एक आधुनिक गुरु की पहचान है—''ऐसा व्यक्ति, जो इस समय की जरूरतों पर ध्यान दे सके, जो अधिकतम स्वीकार्यता के लिए इस समय के तरीकों से बात कर सके और इस समय के तरीकों से खुद को पेश कर सके.''

आधुनिकता के लक्षण क्या हैं? उदाहरण के तौर पर आप सद्‌गुरु से किसी भी विषय पर बात कर सकते हैं. उनसे पूछिए कि क्या किसी व्यवसायी के लिए गुरु बन बैठना अटपटी बात नहीं है, तो वे हंसते हुए जवाब देते हैं, ''मैं मोटरसाइकिल पर दुनिया भर का भ्रमण करना चाहता था. उसके लिए पैसों की जरूरत थी. इसलिए मैं व्यवसाय में गया और पैसे कमाए.'' जब कोयंबतूर में आश्रम शुरू हुआ, तो वह झोंपड़ियों का बना हुआ था. जिसे आवारा हाथी अकसर तहसनहस कर देते थे. आज वहां 1,800 लोग रहते हैं, सप्ताहांतों में 8-10 हजार लोग आते हैं. दुनिया भर में उनके केंद्रों में एक लाख स्वयंसेवक काम करते हैं. वे कहते हैं, ''पैसा तो बस आपको प्रभावी बनाने का साधन है.'' अब वे अमेरिका के टेनिस्सी में 1,700 एकड़ में आश्रम बनवा रहे हैं. उनकी 11 कंपनियों की ईशा बिजनेस का कारोबार 100 करोड़ रु. का हो गया है.